राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन और वर्तमान युग में उसकी सार्थकता

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की
पी-एच० डी० (शिक्षा) उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

MEERUT UNIVERSITY

फरवरी, १९९४

Year of Award 1995.

निर्देशक :

डॉ० गिरीश चन्द्र पचौरी

एम०ए० (राजनीति, हिन्दी), एम०एड०,
पी-एच०डी०

अध्यक्ष, शिक्षा संकाय
जे० वी० जैन कालेज, सहारनपुर

शोधकर्त्ता :

शरद कुमार वर्मा

एम०ए०,एम०एड०
शिक्षा संकाय
जे० वी० जैन कालेज, सहारनपुर

National Social Science Documentation Centre
Library NASSDOC
Acc. No. 35099
Date 9.11.95
I.C.S.S.R. New Delhi
TV 163

प्रमाण-पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि **'राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन और वर्तमान युग में उसकी सार्थकता'** शीर्षक शोध प्रबन्ध मेरठ विश्वविद्यालय की पी-एच0डी0 उपाधि के लिये लिखा गया है । श्री शरद कुमार वर्मा द्वारा मेरे पर्यवेक्षण में इसे सम्पन्न किया गया है । यह श्री वर्मा का स्वयं का कृतित्व है । इन्होंने इसे अत्यधिक परिश्रम एवं अध्यवसाय से पूरा किया है । यह विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षण के लिये प्रस्तुत योग्य है ।

इस कार्य को पूर्ण करने में, इन्होंने मेरठ विश्वविद्यालय के नियमानुसार आवश्यक उपस्थिति पूरी की हैं ।

शोध निर्देशक

दिनांक : 21 फरवरी 1994

[डा0 गिरीश चन्द्र पचौरी]
अध्यक्ष
शिक्षा संकाय,
जे0वी0जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सहारनपुर

घोषणा

मैं घोषित करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **'राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन और वर्तमान युग में उसकी सार्थकता'** मेरा अपना मौलिक प्रयास है । इसे इससे पूर्व कभी प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

शोधकर्त्ता

दिनांक : 21 फरवरी, 1994

(शरद कुमार वर्मा)

पुरोवाक्

शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है । यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है । जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है, वैज्ञानिक ढ़ंग से अमल की सम्भावना बढ़ती है और समझ और चिन्तन में स्वतंत्रता आती है । शिक्षा के द्वारा ही आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों की आवश्यकता है । जिनके अनुसार जनशक्ति का विकास होता है । शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को सम्बल मिलता है । जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरिता की आधार शिला है । शिक्षा के द्वारा ही हमारे संवधिान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्म निरपेक्षता और लोकतन्त्र के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अग्रसर होने में सहायता मिलती है । शिक्षा के द्वारा ही अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति और सद्‌भावना स्थापित होने में सहायता मिलती है । इस प्रकार यह कहना सही होगा कि शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है, शिक्षा ही हमारे सपनों को साकार करने का सबल माध्यम है ।

मानव इतिहास के आदि काल से शिक्षा का विविध भाँति विकास एवं प्रसार होता रहा है । प्रत्येक राष्ट्र अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति देने और पनपाने के लिये और साथ ही समय की चुनौतियों का सामना करने के लिये, अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है लेकिन राष्ट्र के इतिहास में कभी - कभी ऐसा समय आता है जब दीर्घ-काल से चले आ रहे उस सिलसिले को एक नई दिशा देने की नितान्त आवश्यकता हो जाती है । आज भारत में यही समय है । आज हमारी शिक्षा के समक्ष जीवन के विभिन्न पक्षों

सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक आदि से सम्बन्धित अनेक जटिल समस्याओं के समाधान तथा समाज और राष्ट्र के विकास की दो चुनौतियाँ है जिनमें उसे एक ओर देश की आन्तरिक विकास व आनन्दपूर्ण जीवन को पोषित करना है और दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका द्वारा सार्वभौमिक मूल्यों की स्थापना करना है । आज राष्ट्र के सामने जो समस्यायें उत्पन्न हुइ है और जो चुनौतियाँ आयी है, उनका समाधान भारतीय दार्शनिकों और शिक्षाविदों के विचारों के आधार पर ही हम प्राप्त कर सकते हैं ।

सर्वपल्लि राधाकृष्णन विख्यात दार्शनिक, मानव संस्कृति के महान व्याख्याता और शिक्षा के प्रेरणादायक कीर्तिस्तम्भ है । प्रख्यात विद्या-साधक राधाकृष्णन की प्रज्ञा ने भारतीय शिक्षा की अवधारणा के मर्म को समझा था कि जो हर प्रकार के अंधकार, अवरोध से मनुष्य को मुक्त करे वही विद्या है ' सा विद्या या विमुक्तये ' । उन्होंने अपने गहन, व्यापक एवं दार्शनिक ज्ञान से शिक्षा के उद्देश्यों, प्रयोजनों और उनसे सम्बद्ध आदर्शों और मूल्यों तथा अन्य पक्षों पर चिन्तन और मनन किया । भारत की वर्तमान समस्याओं और चुनौतियों तथा मानव संस्कृति के इतिहास को देखते हुये उनके विचार सबसे अधिक प्रासंगिक हैं । उनका शिक्षा दर्शन हमारा आशा-दीप बन सकता है । इसी विचार से प्रेरित होकर, मैने अपने शोध प्रबन्ध के विषय का चयन किया । इस शोध प्रबन्ध में, मैंने राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का सूक्ष्म अवलोकन करने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत शोध को सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न कराने का श्रेय मेरे शोध निर्देशक डा0 गिरीश चन्द्र पचौरी, अध्यक्ष, शिक्षा संकाय, जे0वी0जैन कॉलेज सहारनपुर को है । उन्हीं की प्रेरणा से मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने की इच्छा जागृत हुई । उन्होंने जहां विषय के

अध्ययन और चिन्तन की दृष्टि प्रदान की, वहां वास्तविक अर्थों में गुरू का दायित्व निर्वाह कर मेरा मार्गदर्शन किया और अपने मधुर स्नेह एवं प्रेरणाप्रद सहयोग एवं सहानुभूति प्रदान कर समय-समय पर अनेक समस्याओं का समाधान करके मेरा उत्साह बढ़ाया और मुझे प्रोत्साहित किया । उनके इस स्नेह और सहृदयता, प्रेरणा और प्रोत्साहन के प्रति मैं अपना विनीत सम्मान और आभार प्रकट करता हूँ ।

शोधकार्य के अनन्तर, समय-समय पर प्रो0 आर0ए0 शर्मा, निवर्तमान अध्यक्ष एवं प्रो0 के0जी0 शर्मा, अध्यक्ष, शिक्षा संकाय, मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ तथा डा0 आर0 एन0 अग्रवाल अध्यक्ष, शिक्षा संकाय, मेरठ कॉलेज मेरठ, डा0 ए0के0 गुप्ता, डा0 पी0के0शर्मा, जे0वी0जैन कॉलेज, सहारनपुर तथा श्री एम0 एल0 साह प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय, सरसावा से जो परामर्श एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है उसके लिये मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ ।

मैं अपने परिवार के सदस्यों - श्रीमती विमला वर्मा, रोहित वर्मा, डा0 प्रभात वर्मा, डा0 मीना वर्मा, ललित वर्मा, प्रबोध वर्मा, सुबोध वर्मा का भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने शोधकार्य के विभिन्न चरणों में मेरी सहायता की है ।

मैं अपने सहयोगियों श्री आर0 के0 सिंघल, एडवोकेट, श्री महेश कुमार काम्बोज, एडवोकेट, श्री एस0के0 त्यागी, पी0जी0टी0 (फिजिक्स) , कु0 सीमा शर्मा व कु0 प्रीति सिंघल का भी आभारी हूँ जिनका अमूल्य सहयोग इस कार्य में प्राप्त हुआ है ।

मैं मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ, एन0सी0ई0आर0 टी0, नई दिल्ली, सी0आई0ई0 दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, सी0एस0एस0आर0 नई दिल्ली,

सी0 आई 0 ए0 एस0, बनारस विश्वविद्यालय, बनारस, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, पटना विश्वविद्यालय, पटना, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, क्षेत्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय मैसूर एवं जे0वी0 जैन कॉलेज सहारनपुर के पुस्तकालयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने शोध विषय का अध्ययन करने में पर्याप्त सहायता प्रदान की । अध्ययन के अनन्तर विषय को अधिक और पूर्ण प्रभावी बनाने के लिये सांकेतिक स्वरूप (सिनआपसिस) में किंचित परिवर्तन किये गये हैं ।

मैं, श्री विनय कुमार जैन, नेशनल टाईप कॉलेज, बाजार पुराना बजाजा, सहारनपुर के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ कि जिन्होंने सुन्दर टंकण कार्य करके इस शोध कार्य में सहयोग प्रदान किया है ।

(शरद कुमार वर्मा)

विषय सूची

प्रमाण-पत्र

घोषणापत्र

पुरोवाक्

अध्याय	विषय	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	प्रस्तावना	1 - 31
	1. भूमिका	
	1.1 शिक्षा : व्यक्ति के सन्दर्भ में	
	1.2 शिक्षाः राष्ट्र और समाज की प्रगति के सन्दर्भ में	
	1.3 शिक्षा : प्रजातंत्र की सफलता के सन्दर्भ में बदलता हुआ वृत्त केन्द्र	
	2. शिक्षा की अवधारणा	
	3. दर्शन की अवधारणा	
	4. शिक्षा दर्शन की अवधारणा	
	5. शिक्षा दर्शन की आवश्यकता एवं महत्व	
	6. शिक्षा एवं दर्शन का पारस्परिक सम्बन्ध	
	7. प्रस्तुत समस्या की उत्पत्ति	
	8. समस्या का कथन	
	9. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व	
	10. शोधकार्य के उद्देश्य	
	11. शोधविधि	

	12.	शोध प्रक्रिया	
	13.	अध्ययन का प्रारूप	
द्वितीय अध्याय		सम्बन्धित साहित्य	32- 65
तृतीय अध्याय		राधाकृष्णन का जीवन परिचय और उनके दर्शन की पृष्ठभूमि :	66 - 114
	3.1	प्रारम्भिक जीवन एवं शिक्षा	
	3.2	मैसूर में प्रोफेसर	
	3.3	कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर	
	3.4	विदेशों में व्याख्यान	
	3.5	अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता	
	3.6	आन्ध्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति	
	3.7	आक्सफोर्ड में विजिटिंग प्रोफेसर	
	3.8	बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कुलपति	
	3.9	दीक्षान्त अभिभाषण, चीन यात्रा एवं लेखन	
	3.10	मास्को में राजदूत एवं आक्सफोर्ड में प्रोफेसर	
	3.11	भारत के उपराष्ट्रपति	
	3.12	भारत के राष्ट्रपति	
	3.13	राधाकृष्णन के दर्शन की पृष्ठभूमि	

चतुर्थ अध्याय राधाकृष्णन की दार्शनिक विचारधारा 115-154

4.1 परम सत्

4.2 ईश्वर

4.3 जगत

4.4 तर्क बुद्धि एवं अन्तर्ज्ञान

4.5 कर्म सिद्धान्त

4.6 पुनर्जन्म

4.7 मुक्ति

4.8 आध्यामवादी मानववाद

पंचम अध्याय राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन में शिक्षा का स्वरूप 155 - 187

5.1 शिक्षा की विभिन्न अवधारणायें

5.1.1 शिक्षा : आध्यात्मिक विकास

5.1.2 शिक्षा:अभिवृद्धि की प्रक्रिया

5.1.3. शिक्षा : दूसरा जन्म

5.1.4 शिक्षा : नैतिकता का विकास और चरित्र का प्रशिक्षण

5.1.5 शिक्षा : संस्कृति का संरक्षण व विकास है

5.1.6 शिक्षा : व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास की प्रक्रिया के रूप में

5.1.7 शिक्षा : सन्तुलित विकास

5.1.8 शिक्षा : सादा जीवन उच्च विचार

5.1.9 शिक्षा : लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास

5.1.10 शिक्षा : शिक्षा को मानववादी होना चाहिये

5.2 शिक्षा सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्त

5.2.1 प्रज्ञान अथवा वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति

5.2.2 मानव आत्मा की स्वतंत्रता

5.2.3. चरित्र का निर्माण

5.2.4 आत्म प्रकाशन की कला की प्राप्ति

5.3 शिक्षा के आधारों की दृष्टि से मूल्यांकन

5.3.1 दार्शनिक आधार

5.3.2 सामाजिक आधार

5.3.3 मनोवैज्ञानिक आधार

5.3.4 ऐतिहासिक आधार

षष्ठ अध्याय राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य एवं मूल्य 188 - 221

6.1 उद्देश्य का अर्थ

6.2 उद्देश्य की आवश्यकता एवं महत्व

6.3 उद्देश्य निर्धारण में प्रभावकारी कारक

6.3.1 सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक

6.3.2 ऐतिहासिक कारक

6.3.3 भौगौलिक कारक

6.3.4 आर्थिक कारक

6.3.5 राजनैतिक कारक

6.3.6 जीवन के आदर्श, विचार व दर्शन आदि से सम्बन्धित कारक

6.4 राधाकृष्ण के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

6.4.1 चारित्रिक विकास

6.4.2 आध्यात्मिक विकास

6.4.3 राष्ट्रीयता का विकास

6.4.4 लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास

6.4.5 अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास

6.4.6. धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण का विकास

6.5 राधाकृष्णन की दृष्टि में शिक्षा के मूल्य

सप्तम अध्याय राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम 222 - 274

7.1 पाठ्यक्रम का अर्थ

7.2 पाठ्यक्रम के लक्ष्य

7.2.1 सामान्य शिक्षा देना

7.2.2 उदार शिक्षा का देना

7.2.3 व्यावसायिक शिक्षा का देना

7.3 विभिन्न विषयों की शिक्षा के सम्बन्ध में राधाकृष्णन के विचार

7.3.1 मानविकी

7.3.2 साहित्य

7.3.3 काव्य

7.3.4 सामाजिक विज्ञान

7.3.5 दर्शन

7.3.6 ललित कलाएं

7.3.7 इतिहास

7.3.8 भूगोल

7.3.9 विज्ञान

7.3.10 गणित

7.3.11 धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा

7.4 राधाकृष्णन के अनुसार विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा

7.4.1 प्राथमिक स्तर पर

7.4.2 माध्यमिक स्तर पर

7.4.3 स्नातक स्तर पर

7.5 पाठ्य सहगामी क्रियायें

7.6 व्यावसायिक शिक्षा

7.6.1. कृषि

7.6.2 वाणिज्य

7.6.3 इन्जीनियरिंग एवं टैक्नालॉजी

7.6.4 चिकित्सा

7.6.5 विधि.

7.6.6 शिक्षा

7.7 स्नातकोत्तर प्रशिक्षण व शोधकार्य

7.8 भाषाओं का अध्ययन

अष्टम अध्याय नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा 275 - 315

8.1 धर्म का अर्थ

8.1.1 नैतिकता और आचरण सम्बन्धी धर्म के अर्थ का विवेचन

8.1.2 मानवीय भावमूलक धर्म के अर्थ का विवेचन

8.1.3 मानवीय ज्ञानपरक धर्म के अर्थ का विवेचन

8.1.4 मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में धर्म के अर्थ का विवेचन

8.2 धर्म का क्षेत्र

8.3 धर्म का स्रोत

8.4 मानव जीवन में धर्म की भूमिका

8.5 सर्वधर्म समन्वय (विभिन्न धर्मों की एकता एवं समन्वय)

8.6 धर्म एवं नैतिकता

8.7 धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन

8.8 धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

8.8.1 मौन चिन्तन

8.8.2 महान पुस्तकों का अध्ययन

8.8.3 धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन

8.8.4 धर्म दर्शन

8.9 राधाकृष्णन के अनुसार विभिन्न स्तरों पर धार्मिक शिक्षा

8.9.1 विद्यालय स्तर पर

8.9.2 विश्वविद्यालय स्तर पर

नवम् अध्याय राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षण विधियां 316 - 34

9.1 पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण विधियां

9.2 भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण विधियां

9.3 राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षण विधियां

9.4 पुस्तकालय

9.5 प्रयोगशालाएं

9.6 राधाकृष्णन के अनुसार अनुशासन की संकल्पना

दसम अध्याय राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन और शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध एवं शिक्षा के अन्य पक्ष - 341 - 3

10.1 शिक्षक

10.1.1 शिक्षक के कार्य

10.1.2 शिक्षक के गुण

10.2 शिक्षार्थी

10.3 शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध

10.4 परीक्षाएं

10.5 पाठ्य पुस्तकें

10.6 पलायनवाद

10.7 अनौपचारिक शिक्षा

10.8 नारी शिक्षा

एकादश अध्याय राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन की सार्थकता 379 - 4

11.1 निष्कर्ष

11.2 वर्तमान युग में राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन की सार्थकता

11.3 भावी शोध की संभावनाएं

सन्दर्भ ग्रन्थावली